

Dr.Sunita Kumari,  
Guest Assistant Professor,  
Dept. Of Home Science,  
SNSRKS College, Saharsa  
BA Part-III  
Dt. 11/04/2022

### Q. विद्यालय में बालक के व्यक्तित्व विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है ,वर्णन करें ? (Continued)

#### 3. अध्यापक-विद्यार्थी सम्बन्ध

विद्यालय में एक छात्र का अधिगम और उपलब्धि किस प्रकार की होगी, यह बहुत कुछ इस बात पर भी निर्भर करता है कि अध्यापक और विद्यार्थियों में सम्बन्ध किस प्रकार के हैं। एक छोटे बच्चे के लिए अध्यापक माँ का प्रतिस्थापित (Mother Substitute) रूप है। दूसरी ओर कुछ बड़े बालकों के लिए शिक्षक वह वयस्क व्यक्ति है, जो आदरणीय और प्रशंसा पाने वाला है, जिसके व्यवहार का अनुकरण करना चाहिए। अतः आवश्यक है कि अध्यापकों में प्रभावशाली आदर्श और अनुकरणीय गुण और विशेषताएँ होनी चाहिए। इस दिशा में अध्ययनों में देखा गया कि अध्यापक की अभिवृत्तियों के प्रति विद्यार्थी अत्यधिक संवेदनशील होते हैं।

बहुधा यह देखा गया है कि अधिकांश अध्यापक मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्तर के होते हैं। विद्यालयों में पढ़ने वाले अधिकांश छात्र भी मध्यम सामाजिक-आर्थिक वर्ग के होते हैं, क्योंकि ऐसे अध्यापकों को अपने विद्यार्थियों को समझने में अधिक कठिनाई नहीं होती है।

बहुधा कक्षा का वातावरण अध्यापक की अभिवृत्तियों को अभिव्यक्त करता है। एक अध्यापक यदि कक्षा में डरा-धमका कर या मार-पीटकर शिक्षा देता है तो कक्षा के विद्यार्थी भी कठोर स्वभाव वाले हो जाते हैं। उनके व्यवहार में लचीलापन समाप्त हो जाता है (H. H. Anderson & G. L. Anderson, 1946)।

**बी० कुप्पूस्वामी (B. Kuppuswamy, 1976)** का विचार है कि, “जब बालक निम्न वर्ग से सम्बन्धित होते हैं तो बालकों और अध्यापकों के मूल्य में खाई होती है। ऐसा बालक या तो शिक्षकों की आज्ञा का पालन नहीं करता, या आक्रामक रवैया अपनाता है या उदासीन हो जाता है, अथवा कक्षा में अनुपस्थित रहता है। ऐसे विद्यार्थी धीमी गति से सीखते हैं, इससे अध्यापक उनसे ऊब जाते हैं या उनसे निराश हो जाते हैं। इस प्रकार अध्यापक और विद्यार्थी दोनों ही एक-दूसरे को स्वीकार नहीं करते। “

अनुशासन बालक मुख्यतः अपने संरक्षकों व अध्यापकों से सीखता है। अनुशासन के द्वारा समाज द्वारा मान्य नैतिक व्यवहार को सिखाया भी जाता है। विद्यालय का अनुशासन बालक के व्यवहार और अभिवृत्तियों को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करता है। जब विद्यालय में अनुशासन प्रभुत्वात्मक (Authoritarian) होता है तो ऐसे वातावरण के कारण विद्यार्थी में अनेक प्रकार की व्यक्तित्व सम्बन्धी विशेषताएँ उत्पन्न हो जाती हैं, जैसे-अधिक संवेदनशीलता, अन्तर्मुखी व्यक्तित्व, सन्देह करना, शर्मीलापन, अलग-अलग और अकेला रहने की प्रवृत्ति आदि। जब विद्यालय में अनुशासन प्रजातान्त्रिक प्रकार का होता है तो बालकों में अनेक व्यक्तित्व विशेषताएँ उत्पन्न हो जाती हैं, जैसे प्रसन्नता, सहयोग, आत्म-महत्व और विश्वास की योग्यता आदि।

जब कक्षा का वातावरण संवेगात्मक (Healthy Emotional) प्रकार का होता है तो बालक में प्रसन्नता, सहयोग की भावना ही उत्पन्न नहीं होती है, बल्कि वह कक्षा के नियमों को मानने वाला होता है और पढ़ने के लिए अधिक प्रेरित होता है। दूसरी ओर अस्वस्थ संवेगात्मक वातावरण विद्यार्थियों को तनावपूर्ण, चिड़चिड़ा, झगड़ालू बनाता है। ऐसे बच्चे पढ़ने के प्रति प्रेरित नहीं होते हैं। इस दिशा में हुए अध्ययनों में यह देखा गया है कि कक्षा का संवेगात्मक वातावरण बहुत कुछ कक्षा-अध्यापक की अभिवृत्तियों से प्रभावित होता है तथा इस बात से भी प्रभावित होता है कि कक्षा-अध्यापक कक्षा में अनुशासन की कौन-सी विधि अपनाता है।

#### 4. विद्यालय और शैक्षिक उपलब्धि

इस दिशा में हुए अध्ययनों में देखा गया है कि कुछ विद्यार्थी ऐसे होते हैं, जिनकी कक्षा में उपलब्धि उनकी योग्यताओं को देखते हुए अपेक्षाकृत कुछ कम होती है। कई बार विद्यार्थियों की यह शैक्षिक उपलब्धि परिस्थितिजन्य (Situational) होती है। बहुधा यह देखा गया है कि जब किसी विद्यार्थी के परिवारीजन की मृत्यु हो जाती है, विद्यार्थी को एक स्कूल से दूसरे में प्रवेश कराया जाता है या विद्यार्थी को कोई तीव्र संवेग उत्पन्न करने वाला अनुभव होता है तो विद्यार्थियों को शैक्षिक उपलब्धि सामान्य की अपेक्षा कम रह जाती है। विद्यार्थी की कम शैक्षिक उपलब्धि का कारण परिवार, स्कूल और विद्यार्थी स्वयं से सम्बन्धित हो सकता है। जब विद्यार्थियों की पढ़ने में रुचि नहीं होती है और पढ़ने के प्रति उनमें विद्रोही भावना पायी जाती है तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि कम रह जाती है।

कुछ विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उनकी योग्यताओं की अपेक्षा अधिक अच्छी होती है। बहुधा ऐसे विद्यार्थियों को पढ़ने की अधिक सुविधाएँ प्राप्त होती हैं तथा अच्छे शिक्षकों से सीखने की सुविधा प्राप्त होती है।

#### 5. स्कूल तथा व्यक्तित्व

परिवार के बाद बालक के व्यक्तित्व पर पढ़ाई का प्रभाव पड़ता है। पढ़ाई के जिन बच्चों के साथ बच्चा खेलता है अथवा जो बच्चे बालक के साथ उससे खेलने उसके घर आते हैं, बच्चा इन बच्चों से अनेक आदतें और तरह-तरह के कौशल ही नहीं सीखता है, बल्कि बच्चे का बौद्धिक और संवेगात्मक विकास भी इन बच्चों के व्यवहार से प्रभावित होता है। जब बच्चा कुछ और बड़ा हो जाता है, तब वह विद्यालय जाता है। विद्यालय में वह शैक्षिक सफलता और असफलता के अनुभव प्राप्त करता है। विद्यालय में बच्चे के समायोजन सम्बन्धी अनुभव उसके विकसित होते व्यक्तित्व के लिए लाभदायक भी हो सकते हैं और हानिकारक भी हो सकते हैं।

**ग्लासर (Glasser, 1969)** ने विद्यार्थियों के प्रति प्रकार्य की आलोचना करते हुए कहा है कि विद्यालय उन विद्यार्थियों की उपलब्धि को अवरुद्ध कर देते हैं, जो विद्यार्थी विद्यालय में असफल हो जाते हैं अथवा शैक्षिक उपलब्धि में अन्य विद्यार्थियों के साथ प्रतिस्पर्धा करने में पीछे रह जाते हैं। विद्यालय से केवल उन्हीं विद्यार्थियों को लाभ होता है, जिनका विद्यालय में कार्य निष्पादन अच्छा होता है। ग्लासर ने आगे कहा है कि विद्यालय में शैक्षिक उपलब्धि के ही आधार पर विद्यार्थी की सफलता को आँका जाता है। उसकी सफलता आँकते समय उसके सीखने के अन्य प्रकार के अनुभवों पर ध्यान नहीं दिया जाता है। विद्यालय में बच्चा अपने सहपाठियों तथा विद्यालय के शिक्षकों आदि के व्यवहार से ही प्रभावित नहीं होता है, बल्कि विद्यालय का सामान्य वातावरण भी बालक के व्यवहार को प्रभावित करता है। उसे विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के बच्चों के साथ मिलने का अवसर मिलता है। वह इन तमाम प्रकार के बच्चों की आदतों, विचारों और चरित्र आदि से प्रभावित होता है।

एक अध्ययन (E. F. Hellersberg, 1957) में यह सिद्ध किया गया है कि संरक्षकों के बाद बालक के व्यक्तित्व विकास पर स्कूल का प्रभाव उसी प्रकार पड़ता है, जिस प्रकार से जैसे पहला प्रभाव घर या परिवार का पड़ता है और प्रभाव उस कक्षा का पड़ता है, जहाँ बालक पढ़ता है।

दूसरा एक अन्य अध्ययन (Davidson Larg, 1960) में यह देखा गया कि प्राथमिक स्कूल के अनुभवों और बच्चों के स्वयं के प्रति प्रत्यक्षीकरण में घनिष्ठ सम्बन्ध है। इस अध्ययन में यह देखा गया कि जो बच्चे यह समझते हैं कि शिक्षक की दृष्टि में वह अच्छे बच्चे हैं, ऐसे बच्चों का व्यवहार अधिक उपयुक्त होता है तथा ऐसे बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि भी में अपेक्षाकृत अधिक अच्छी होती है। बच्चों के सामाजिक तथा संवेगात्मक विकास में स्कूल के साथी समूह का प्रभाव सर्वाधिक पड़ता है।

**हरलॉक (1974)** का विचार है कि स्कूल से सम्बन्धित अनेक कारकों का प्रभाव बालकों के व्यक्तित्व के विकास पर पड़ता है। उदाहरण के लिए, कक्षा के वातावरण का प्रभाव, अध्यापक, अनुशासन, विद्यालय में पक्षपात, शैक्षिक उपलब्धि, सामाजिक उपलब्धि आदि कारक बालक के व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करते हैं।

**स्कूल और चरित्र-** परिवार के बाद विद्यालय का भी बालक के नैतिक और चारित्रिक विकास पर महत्वपूर्ण ढंग से प्रभाव पड़ता है। विद्यालय के शिक्षक, सहपाठी और शतावरण आदि सभी कुछ बालक के नैतिक विकास में कुछ

योगदान में अवश्य देते हैं। विद्यालय में बालक का पाठ्यक्रम और अनुशासन का भी उसके नैतिक मूल्यों के विकास पर महत्वपूर्ण ढंग से प्रभाव पड़ता है। एक विद्यालय का सामान्य अनुशासन और व्यवस्था जहाँ ठीक होती है, वहाँ पढ़ने वाले बालकों को चारित्रिक विकास के लिए सुन्दर वातावरण मिलता है। विद्यालयों में बालकों के नैतिक विकास पर उसके साथी समूह का भी महत्वपूर्ण ढंग से प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए, बालक के साथी यदि दुराचारी हैं तो निश्चय ही बालक में भी इसी प्रकार के व्यवहार प्रतिमान विकसित होंगे।

**स्कूल और आत्म-प्रत्यय (Self-Concept)-** लगभग तीन-चार वर्ष की अवस्था तक बालक सेक्स सम्बन्धी अन्तर समझने ही नहीं लगता है, बल्कि वह बालों और कपड़ों के रख-रखाव के आधार पर लड़के-लड़कियों और स्त्री-पुरुषों को अलग-अलग पहचानने भी लग जाता है। जब वह स्कूल जाना प्रारम्भ करता है, तो उसके यह अन्तर अधिक और अधिक स्पष्ट हो जाते हैं, परन्तु वयःसन्धि अवस्था में वह दो सेक्स के अन्तर को पूर्णतः पहचान जाता है। जब बालक स्कूल जाना प्रारम्भ करता है, उस समय तक मेल और फीमेल कार्यों को भी जानने लग जाता है। लगभग चार साल का बालक अपने जातीय और प्रजातीय अन्तरों को भी इसलिए पहचानने लग जाता है कि खेल के साथी और दूसरे लोग उससे उसकी जाति और प्रजाति के अनुसार व्यवहार करने लग जाते हैं। जब वह स्कूल जाने लग जाता है, तब वह अपने परिवार की प्रतिष्ठा और अपने परिवार के सामाजिक और आर्थिक स्तर का भी ज्ञान प्राप्त कर लेता है। स्कूल जाने तक वह यह समझने लगता है कि परिवार की और उसकी प्रतिष्ठा तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर माता-पिता के व्यवसाय से निर्धारित होता है। वह इन अर्थों को अपने आत्म-प्रत्यय से जोड़ लेता है।

**स्कूल और सामाजिक विकास-** बालक का सामाजिक विकास किस प्रकार का होगा, यह उसके पड़ोस और स्कूल भी निर्धारित होता है। बालक के पड़ोस में रहने वाले बच्चों और वयस्कों के सामाजिक व्यवहार का भी प्रभाव बालक पर पड़ता है। पड़ोस में किस प्रकार के सामाजिक कार्यक्रम होते हैं, कैसा सामाजिक वातावरण है, आदि कारक भी बालक के सामाजिक विकास को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करते हैं। विद्यालय में शिक्षकों और बालक के मित्र भी बालक के सामाजिक विकास में योगदान देते हैं। विद्यालय में बालक को अपनी आयु के अनेक बालकों के साथ बैठने और सीखने का अवसर ही नहीं मिलता है, बल्कि उसे बड़े बच्चों के सामाजिक अनुभव सुनने और सामाजिक व्यवहार को देखने का अवसर मिलता है। इन अवसरों से उसकी सामाजिक सूझ तथा उसका सामाजिक प्रत्यक्षीकरण बढ़ता है। फलस्वरूप वह समाज के विभिन्न मूल्यों से सम्बन्धित व्यवहार का अधिगम करता है। विद्यालय के अनेक कार्यक्रमों में भाग लेकर भी वह अनेक सामाजिक व्यवहार प्रतिमानों को सीखता है। विद्यालय से वह सहयोग, मित्रता, उत्तरदायित्व और आत्मनिर्भरता आदि सीखता है।